

कूटारिषिष्टे ज्ञानमनतन्त्रमदंगमसिधनयनसायामकूटारिषिकं ॥ ० ॥
 अध्यायवत्तावाविद्वज्जगत्यादिना लावनामसूत्रपितवल्कं निष्ठां ज्ञायप्र
 यविमतामिनारु नृपस्यनसत्कारिर्न निष्ठावजात्रामिता ललकविवि
 श्या ॥ वज्रविद्यया अग्राणि सिद्धिर्न मसिद्धिं वजाशिष्यकं ८४ ॥ तत्स
 र्ववृद्धानां गुरुवज्रसिद्धयन ॥ वजाशिष्यकं ॥ ७ ॥ अध्यायवत्तावा
 वाविद्वज्जगत्यादिना लावनामसूत्रपितवल्कं निष्ठां र्वकावज्जगत्या

अध्यायवत्तावा

ASIA ARCHIVES

2717

दिग्-पुत्रा

सगनयत्रिवासान् श्राकषयन् ॥ डंयमायस्यादा ॥ मडा ॥ दक्षिणाम
दिवा नूटं नीवेलेकु विक्रमं दलुदमं यमधारे पुनाधियमदधि
की ॥ गस्य दधिविवागाव पुझीकं विनयन् ॥ विगव नू मदावीर् व
जा कृष्णधुधनिर्वा डंयुझनकसर्वेइसु यमात्रिसयत्रिवासान् कील
य २ दू २ ८ ॥ पं ४ ला ० धं ४ मु ० ॥ २ ॥ डं व नू लादि सगनयत्रिवासा
न हसक षयन् ॥ डं व नू लयस्यादा ॥ मडा ॥ पश्चिमद्य बकना नूटं स

फरुनाविशु विगंनानागया सधवं ॥ डंयन् श्रायाधिकीमदधिकं गयी ॥
दधेनविनासाय पुमान् कं विनयन् ॥ वकव नू वेमदा सीमं यमान्
कंदलुधनिर्वा डंयमान् कसर्वेइसु व नू लान् सयत्रिवासान् कीलय
२ दू २ ८ ॥ पं ४ ला ० धं ४ मु ० ॥ ३ ॥ डं व नू लादि सगनयत्रिवासान्
कषयन् ॥ डं व नू लायस्यादा ॥ मडा ॥ ड क ले गु व ग नू टं यी व नू ल
धनाधियं न कू लि वी ज प व कं यत्राधियमदधिकं वरं यी दधेना

गाय विद्याककविचिन्त्यगनीलवल्गुमहावीरं विष्णुकलिसेवलयः
॥ ८ ॥ विद्याककसर्वदृष्टगलयेतिकुर्वलान् साकषसयत्रिवानानकीलयर
हंरुट् ॥ यं ४ लायं ४ रु ॥ ७ ॥ ४ ॥ अद्यादिसगलपविवावान् साकषकेयन
उअगेनेस्वादा ॥ म ॥ अत्रिकानेपुय्यगलं नकु रुसयधविमं १८
लुनककमलुपुधनं तजाविमिददिकं तषादय्यविनासयकाधभव
विरावयत ॥ नीलवल्गुमहाधारं स्वमे यल्लगलविमं १८ ॥

सर्वदृष्टवीसगलपविवावानकीलयरहंरुट् ॥ यं ४ यं ४ लां ४ रु ॥
८ ॥ ४ ॥ अद्यादिसगलपविवावान् साकषकेयन ॥ ८ ॥ नैमल्यस्वादा ॥ म ॥
॥ नवाहं नैमल्यदवा नीलारं विगकठार्क ॥ स्वमे यल्लगलविमं १८ ॥ नाकुस
महदिकं तषादय्यविमं १८ ॥ यं ४ ला ४ यं ४ रु ॥ ८ ॥ वायुयादिः

सगलपविवाशान्मकषयन॥ उँ वायुवाखाहा॥ म॥ नृगस
नहं वायुवा इवोवल्लुकवइति॥ यताकोष्ठाविलीसोम्यवायेनाधि
यमेदधिके॥ ग॥ पादेयविनाभय नीलकुलुविलावथन। नीलवर
ल्हयुतल्लुनीलवजांकदलुयर्ब॥ उँ नीलकुलुसर्वइष्टवायुस
याविवाशान्कीलयरूद्ररू॥ पू॥ एला॥ ह्यु॥ ४ गु॥ १॥ न॥ उँ ॐ
नादिसगलपविवाशान्मकषयन॥ उँ ॐ नायखाहा॥ म॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महावर्त्मनो विष्णुस्य नमः ॥ १ ॥
वज्राक्षयध्वजोऽसौ महावर्त्मनोऽसौ ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

तवर्णमहाकालं वक्राशयनधर्मविगुणं डंडुं वक्रवर्तुवर्तिमूर्ध्वद्वयः
 न्याकैपिनामदानायविवातानकीलयरुद्ररुद्र ॥ ४ ॥ लाः ४ ॥ धः ४ ॥ मुः ४ ॥
 २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियादिसंगस्यविवातनक्षत्रकर्मधर्म ॥ ३ ॥ अ ४ ॥ धियास्वास्त
 ४ ॥ नागस्यः स्वास्त ॥ ३ ॥ अ ४ ॥ नक्षत्रः स्वास्त ॥ ३ ॥ सर्वदिगक्षकपालागस्त
 ४ ॥ स्वास्त ॥ ३ ॥ म ४ ॥ धियासुखासमाधि स्वस्ववर्णयधविवातनक्षत्र
 नावाधियतिदवान् महावलयवाकुमागवर्धयसविनाभयसुस्त

शरीरविक्रयन ॥ नीलवर्णमहाकाधं वक्राशयनधर्मविगुणं डंडुं मूर्ध्वद्वयः
 सर्वद्वय एधीनागस्तनक्षत्रकीलयरुद्ररुद्र ॥ ४ ॥ लाः ४ ॥ धः ४ ॥ मुः ४ ॥ १० ॥
 ० ॥ नोदिपूजाविधि ॥ ४ ॥ धन ० वायस्ता नडीययकयज्ञ ॥ गुनस्यया
 ० ॥ गुनमलुल नक्षत्रवलि विषर्जन सिन्धुनयक मलुलवि वलिश्च
 या ॥ दगुनि कलेखरावता क्षमयाय दवपूजा दधवलि वियस्वा
 नगान् पक्षयाय वगान् विषर्जन वलपूजा आसिर्वादि (अथा)

आन्यानुष्ठ

दूति विवर्जित दधवलि श्रुय ॥ दधया गायन श्रुय गान वृत्त स्याः
 न वाङ्मादि न लसास्य ईका य ॥ कामात्री पूजा श्रुय स ग्नत विय ॥
 समय वद ॥ करं क श्रुय ॥ म कूट पूजा गगन वद या य म न ज्ञा श्रुय
 बालि श्रुय करं क श्रुय ॥ धावा वलि विय उ थ रु वा दू य र्क
 म क न ज्ञाय ॥ मा क सि धि विका य दान म धा श्रु धि श्रु विय ॥
 ॥ ॐ गि श्रु वा धे नू य या वि धि स मा य ॥ ७ ॥ धुरु म सु ॥

स म न यो नि म क नो पू ज ॥

ॐ न मा व द्वा य ॥ नि म क न पू जा वि ध न मा द ॥ ७ वा र्ग गु न म लु ल म लु ल
 धि न वि व र्ज न ल ख व लि श्रु य ॥ वा दू य पू जा श्रु य ॥ शि स मा धि क ल ष म धि
 वा ष न द व पू जा वि धि धा धू नि धू न दा व ॥ द्वा ज मा न म् दा दू य य क न य
 द व दू दू य म न द व या दू व न द द व ॥ म लु ल धि ल क स्था न वी य क म
 मु नि य द य द व य ७ व स दि व क् गा य श्रु ग स्था न स दि न न द्वा थ द ल
 य य क री न ग र व क न ग र ग व नू धी व म् धा गु वा गी ध ध म् म ज न म सु

न तामनुयाम्यदं नाथ सुम्यत्वा वियाम्यदं गदशच्छिथकल्लुनया
वधमिधुवागीठ्यन जनरुनयाप्रविशाययात निमनुनायाहाध
मीनमस्तत्रयाका वृद्धोत्पादं व सत्त्वानां समुदायसर्वगवृद्धयोड
त्यायाक सत्त्वदाक ज्ञमाज्ञान ड त्यागयायमरुयं कं गकं छ मनुयः
नगयाया समवासरुदिगधा पूजायवानसपिलुयार्ग यावन्ययकः
गिराकाळमनुययदं यो जयमेवांदा रु सु पूजायादिनयीनुयाः

उदाहरयमतात्रा तावदमित्युपयुक्त्य स्वरु मरुमिसायुगं समं
द्यावाधिसत्त्वादिचत्वा नाद्ययपुर्वदानाथगमा ड रु सथायिगयाड
तावद्ययादनं उक्तमनयादन रुनयात्र समं घवाविसत्त्व दे सादिनूव
रुदियात्राजाया यत्रिताप्रसदिगन विष्णुसायुधानरुयया तास वीने
मावास यावत्यायग मसंरु वजयित्वा अन्यात्र रु सानिधायकं रुः
संरुया ग धवाकी नायं विष्णु रु न्य चनवतव र गनसदिगयाड म

वृणासविरुममस्य समस्तविष्णुचक्र दूदू रिक्क धावनलक दूचक
उयासक लाचिमतगुन दूनयायस्य (मस्योनस॥ धाव (वकस्य) ह्या
देस्यामाद्यदधनथागतापगुनिनागकगुयादधिउदयनकाविष्णु
पुसन्नइय लाचिगथागत दूनयायकपाधनायाका॥ धनस्मानयासव
नहावकसाधनमुनियदयगक्रमायनममलुलविषजडा॥ रगवानाह
॥ रगवकनम्रासिकविनासाधूसाधूमहावाहा महापुन्यवलागमः

मधंनयमहावाहादू महाडकमयस्थदूनयायइना॥ यूर्ध्वलापिगवी
ऊरु॥ दूनयूर्ध्वऊमियायं ल्धयापूसाधकतयाइ धूमवियसानडल्य
मिइना॥ सरुलजानि लाधियत दूनकायसदू ले इ वधइले धीधर्म
धारुवागीध्वननआसिकविना॥ अथसगधगनवाकासिपुसानिधायपु
नधमगसवाकसिपुस दूकाव॥ ॥ पुन॥ ४॥ अथ दीपुमानयं लोपाहना
यागागुपितविदुन इवमागानया पाधनायाग दूदू डवसावमनसा

दृष्ट्वा सिरसा वचसा गथा पथ्या कवाया जानूयां दक्षायां नूयं
 गनाम उद्योगा वचनियान नूयुतन् मिश्रान कयावन वचननूया
 लिनियान यथनयान लादागनयान या नागुलिसत्रिपुनयार्थनाया
 हाधर्क विष्णुस्युसन्तुयमात्र ॥ धनददाव ददाव धकादिमण्डल
 थिरक स्नानगन सद्यनगयक दक्षुत्तयुजा आसिद्धिद रुमायना
 कठा विष्णुसद सल्लुपागा द्वाये वलिस्त्रय धानिधूनदाव सानि

पूजितन धानिधूनदाव समयावकु मूख (छायेन धानि निमकुनय
 जाविधिसेय साफ ॥ ॥ ८६ नमः दीपक वाय ॥ ॥ यद्गुरुदनिमकु
 नयुजावनयागा कृष्णयुजा ३१ गाय श्रुत बक्षसुक्त प्रसंगत्वे
 नीनीसेव पयग्वर कसत्रिमरा देवपूजा धूये दीपनेवद्य दक्षुत्तम
 लुलथिले स्नानगने जवपुनिवसदिवकाव हाधका नयवदानमा
 मथसा मारुगवन्दीयक वायुध धर्मा राजनसमुवना वासनयाद

यद्गुरुदनिमकुनय ॥

नाथसंभ्य कला बीजया मयदं ॥ दृष्टी भवन्त्येव यथात्र दीर्घक वयुश्च जन
 द्यनयात्र विष्णो वक यानि मिहिन निमकुना यो दा धर्मा राजानमस्मात्प्रया
 हा ॥ वृक्षाद्या दं वसुधा ना सम त्याय सर्वगे ॥ वृद्ध या इत्याया क सहस्रं दा
 द्यं अमादा क न ड त्या न यो य मरुय के ॥ काष्ठ मलुय न गयीयो ममवा
 सयदिगया पूजा यहा व स विष्णु प्रगया वत्या य द्दि ॥ काष्ठ मलुय य
 दक्षया ॥ ऊधम वा हा द्दि से द्दा क सं पूजा आदिन पिलु पाय दा हा व ये

मधुनात्र नाव न्ने द्दि स्मिन् यत्र यत्थ रूपा गु मदा सितां य नं ॥ स सं द्या वा वि
 लिङ्ग सखो दि वेलाया क्षय व र्ष दान ॥ थ वाना ऊ द्दि स धा पि मया द ग व द्यन
 न क मन या द न द्दि न या व स स द्य वा वि स ल आदिन व गु दि ग स वा द्दि
 नाजा या मय वि वा र स दि ग न ना व स र्वा न मा वा स या व त्या य ग ल स
 दः ॥ व द्दि यित्वा अ वा वि रु सा नि धि क नूः स द्दि यो ग थ द्दा को वि अ
 द्दि न ग व न पू ग व र ग न या द स दि ग न या द भ व ता स वि रु म व र्ग्यं स म

सुविष्णुवर्कन हादि शक्तिरुचयोरस्य गव्यालसु भुव नवृषु ग्या
दस्यां मागद्युधं तथा गता गुति नगमक ग्यादसि उदयनहा वि
क्रादन पुनन शय हादि तथा गत रुचयोरसक योर्थनायाय श्वर्ग
निमलु पूजा स्नानगर्भ आसिद्धिदि नखय अर्थविय लू ताठ वा मग
रु लाकदिवा गियाग पुनू कलस आसनसविष्णुवर्क धनलि
न समस्तं थापनायादह पिठ पाठा करेडा सग्वन पा ० श्वर्गिचू

नहाव उवाय गुवमलु सिन्धुगस्य गुवमलु लविष्णुवर्क ॥ समा
धि कल ठा पूजा निमोजन देव पूथि स्नान रुद्रा पुन पूषनि गीत
न लाहात्रिपक्रा स्नान देव पूजा पिलु पाठ वन बीजा सक रंय
जा पक्षमग पक्षगन्ध पूषदीपने वय अइतान दलीक्रे पुष
न्यास यधमो पा ० चय मलुलथिल स्नानगर्भ शुभडी मनेडी
डीडी भाक सिद्ध तथा गतस्य वृद्धकृण रुद्रक ल्य देव स्वगमने

घाल (यस्य) यलका ॥ ३ ॥ वृद्धस्य ॥ वृष, सिधनाश्च, (ग) नीचन, योग
 यध्यज्जुम, (ग) नमस्ययुदीय, उ कि दृगयत्रि, पिछनलदि रुलममः
 स, अर्धल, वीदिनका लवान ॥ ७ ॥ वृद्धस्य तिस्था ॥ वृष, दृगयत्रि, गचः
 छीखलु, पीगयध्यज्जुम, पिछनलदि (ग) दृगयत्रि, उ कि दधिद्वि, पिछ
 नसन्दि, रुलगवस, अर्धल, वीदिन, छी पीगयध्यज्जुम ॥ ८ ॥ वृद्धस्य
 वृषनील, छीखलु, वृष, सिधनाश्च, वृष, यदीय, उ कि गुडलका

लाजात्रुग, अर्धमगडाहा, पिछयत्रि, रुलगुमाव, वीदि कडव, धन
 सद्य ॥ ९ ॥ नमनिष्ठ, वृष, वृष, गचलस, अगुवत्रि, नीलयध्यज्जुम, अ
 र्धल, वृष, यदीय, उ कि गुडसा, समदमाव, रुलगुमत्र, पिछलस, मध्यवी
 दिमास, कडुविमा ॥ १० ॥ वृद्धस्य ॥ वृष, दार्कध्व, यदीय, गचलस, अ
 गच, नीलयध्यज्जुम, वृष, तिलनेल, यदीय, अर्धमग, मध्य, दका
 द्वाहा, नील, उ कि मनीम, मनीम, मासकलाहा, रुलगुमत्र, वयन, वा, वी

सिम्बाग शरपनिखेर्मेसया ॥ ८ ॥ कनीप्रर्धं वाविष्ममनि वूप सर्वगथ
 वूममयपूव्यरुम सुवर्गलयदीप बुकि मूद्रमास हासुजा डवसम
 खकूयीया अर्धको म्रन बोदिकायाग वावस ॥ ९ ॥ कनीप्रर्धं वि
 वमनि वूपकसुगी जीवभुवतसितपेव्यरुम हायहामूसट
 कि दधिरुविपिनात् म(व)रायूम अरुगधस्रनवेम(व)रुलकल
 स विदिमरुग शरपनि सिहासन ॥ ७ ॥ ॐ नितवगुहयाविमनइया ॥

(नवशरपायुजाविमानदयकम
 (वाकनाप्रठठ यरुगठं
 (पकरसुगकायवउ)
 (कसाभीसुगकायवउ)
 (मइयापाठ)
 (वलोनिधु
 (मसंवरु
 (कागवनिफासुगानक १५
 (गम्यावनवन
 (कदिले म्मासयापा
 (शवन पाठ
 (वाकवनी लामजा लाकलाम
 (शकप्रगाप नादमगलाक
 (इ००गान मोहानिरुयमोन

(इमं गोवलिं श्री कृष्णं म
दुष्टपाप धनिं शुभं विवेक
कृष्णं

(गोविंदाय नमः) लोक नयान् लोक
लोभं लोक प्रणयं सदा भूत
साहिना ध

(पद्मसुगन्धिं नमः)

(भूतनाथं कन्दमणिं

(दक्षिणं लोक ध

(नेम्यं नानावनीं दी

(पश्चिमं गायुडं

(वायुं वा वायुं साध

(उत्तरं नमः गुणं वायुं सदा

(ॐ नमः गोपु मना

लीर

यकग डं वज्रवज्र श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु डं वज्र
वजी श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु
विष्णु श्री श्री वज्र वज्र श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु
नग श्री श्री वज्र वज्र श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु
श्री श्री वज्र वज्र श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु
सर्व वज्र वज्र श्री श्री विष्णु डं वज्र वजी श्री श्री विष्णु

श्री श्री वज्र वज्र

ASHA ARCHIVES

2717

विश्वसुतगस्तुमदं ॥ ७७ ॥ श्रुत्यसत्मा वाधिवज्रसत्यादि ॥ रावतापि
सर्वं कावजं सत्त्वं ॥ अत्यन्तं दन्तवैशमाद्यसिद्धिविरावयत ॥ ७८ ॥ वजा
धियगिस्तमसि विष्णुमि तिष्ठवज्रसमयस्तु ॥ ७९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८२ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८३ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८६ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८७ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९० ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९१ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९४ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९५ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९८ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ १०० ॥

श्रुतिवक्तृत्वादि ॥ ७७ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ७८ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ७९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८० ॥
विप्रनामस्तु ॥ ८१ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८२ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८३ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८४ ॥
वेदिरुवीक ॥ ८५ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८६ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८७ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ८८ ॥
ब्राह्मणनम ॥ ८९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९० ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९१ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९२ ॥
ननूय ॥ ९३ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९४ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९५ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९६ ॥
नूयाय ॥ ९७ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९८ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ ९९ ॥ वज्रसत्त्वं ॥ १०० ॥

१०३ दिवा वि वि॥

[illegible][illegible]

वानगायमलासाव कातर्यन माषमदेनमस शय सगुयवन भाउ दूयकश्रु
दूवायधनन ॥ कुमिदकयडा लुसिथानक यथवल्केलेनभाउ दूयकश्रु
लासावनदूकाय थवरथमससंस्तनवाय मगद्विचय ॥ ७ ॥ लालं वगु जातिरु
ल कूकूम कयुवन लेयनायाय ॥ कृष्ण रं विचिय ॥ वसु लाय मडं दिशवा
मस्वादागसिचरीपमासि ॥ थनसिचुचय ॥ लुकिवाकन मडं सर्वोरप्रमहसुवन
स्वादा ॥ निहाविच ॥ ८ ॥ दं नसुर्ववृद्धा ना येधगुर्क नमस्तु तं यूपमा कं पूरुता
मालव

थीय मकूटय मकूवाकूव डं वडासलदं ॥ भाउ किनितविचक ॥ डं नगठ
डं आठवाठमसुत्रो दानिं धानयसुत्र नमालावलं विनकं धास्वादा ॥ कार्य
यक भागश्रुदिकान ॥ तात्रवा मगद्विचय ॥ ७ ॥ नगठधीरुलयूगाया
नया ॥ लावनास्वानगस्य ॥ धून्धताकवृक्षशिन्नं वाधिविरुस्सूपास्वाव
यिलो ॥ नगठसुददयस्सु विजाद्वरं तोनालीकवामुं सुलिला मूकनिरु
जुवनं गला तस्मानेदाकथ धीरुलं लीतं विचय ॥ योयादि नीला ॥ ८ ॥

न लोहप्रियका यथैवदा वयुर्ज्ञां घञ्जाद न सुति ॥ राहा तसु कु ना वय
 तसुधा वे विहाव राहा तसु त्रिया ॥ मथाय दय ॥ ४४५ ॥ ना थ गति सुडाह
 ना नृपय लकरी गृही लाया निना पिलि वृद्ध वृत्त्यय किर्तिना यन सल्लेन
 सल्लेन यल्लया यो न लल्लुल ॥ नन सल्लेन मेनाथ कामा ल्लय विनये न
 भे सल्लेन दायक गावरा मगहन भाय ॥ ४४६ ॥ सर्वे वृद्ध वृत्त मलि मल्ले
 कूट पुनि ४४६ ॥ अत्रिनी नगाय मनु ॥ ४४७ ॥ वृद्धा स मे नू स वेद ॥ दासा ॥

लासाय न इदं वा व यदव वा व न दायरा वं कलि स चाकू लि स थथी भाय स
 यन सदिन न स्वलि वा क्त न नचा क वरुवा ॥ थ व र थ स सं सन ॥ ४४८ ॥ यन स
 संधु न न वा दा व न रुय ॥ व नृजा युयक ॥ ४४९ ॥ दि या न स मा वि धा न पि न रं सा
 थ स नृ न रुय ॥ न ना ४ अत्रि ला व ना ॥ अ का न स सिद्धि क मि व पु ति मा दि क धा
 ला ४४९ ॥ ४५० ॥ का य स दा ॥ अ रु गिया यरा याय यक इ नी ॥ थ न द धा व लि वि
 य ॥ पुा व न या व रु दाय स य न वि संध वि व गा य वरा थ न वि का मा नी रु जा

थाकादिमल्लथिरकं स्नातगानं पु. लूयाय विष्णुना॥ त्रेखयूजा द
 रुधसुगुन श्रीविष्णुद कोमायूजा रूयनाथमच्छ्रियायया इयो॥
 ५७ नमायूजायानकस गुनसुलुल गिसमाधि केलहायाभायवय
 जा पिवसमदु भयनयं थतवसवाय क्र रभीस्यं इ कायगस्रिकसमान
 गुनसुलुलेदतक विष्णुना॥ स्नातं रूवकं शवना लादात्रिरा स्रय
 यत्रिमिमानताय वरगतगाय यरित मया शोत्रक य नीनीनस्रयक

७५२

॥ मायवद्वनगाम्रय॥ भाठ लूयकनाक मिदाथयूजा॥ सखायक॥ ५८ सः
 श्रीवत्रसविष्णुधनं सर्वाज्ञना वत्राद्यय हं स्नादा॥ थमकुपदधयथन
 क्रसर्वन॥ तग७७ धर्मसुद्वेदिकत्र लासादा॥ थमकुपदधय॥ थनः
 आदयत्रचायाव पिवमैसेदनय॥ गमथा॥ यमदीलं सतिरुतसेस्य
 जिनयुहद सकुतुनाच ववदासम साधितन छीत्र लसंक्रुवजिनस्यः
 निष्ठावविगस्य गमंगलं रुवकुतय वसाशिवक॥ लासात्रदकायथः

वथायसमानायेक गुरुवियः। वस्तु ह्य। यामाउसननुदायीय। उभयाव
 नना। उं वडा मिलेकुरुष। स्वादा॥ नू रगततिवकाउं सवीरवेनरुखन
 स्वादा॥ म्मरवताउं कात्रनपंश्वरु दं सकुटीनिष्ठाया। उं दंगत्सवेवृद्धा
 नां गुं धारु कं नतम्भु गं। यूप्याकं पूजनाथीय। सकुटपयश्व कृतीनरुव
 उं सवेवृद्ध वृथामणिमदासकयगिह स्वादा॥ उं वडा वलगां॥ चोकरुनि
 उं वडा धमगया ग्रीहं॥ उं सत्ववडीहं॥ उं वलवडीयां॥ उं धमवडीः

दीगाउं कर्मवडी म्म॥ धनकामात्रीयूजा सखनविय स्नानमाना। स्नानत
 न वेत्तयूजा असिद्धोद विषर्जन॥ दवडापयकुच्छाया॥ कामात्रीया
 म्मरुस॥ ॥ ॐ निवसुखायां याविधिसमाफ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 (दानस्नयनयाविधान॥ दगुत्री कलसाधिवामन अग्नि स्नायन॥ स्वसिधायं
 केन। दंकात्रजं द्विगुजं विष्वा ऊजं सूर्याय वि श्रांतिदयदस्त्वं वक्य
 म्माकृष्णधरं मूनगमसमाधिसुखवं गिलोकयुसाटकं सदाक्रावाजनेवि

(दानस्नयनयाविधान॥

रागा॥ श्राक र्वेस॥ याद्यादि॥ निगड्डन वडा गात्रवा मगरुनगीय श्रुति
षक र्वेसामृग पशु गव्य दिक्लि॥ पुर्वम कसम कसम द्राक्षव त्रयग
नमाला पोकापड द्यायाव वेशपहावपूजा॥ य॥ ४॥ यादन गात्रवा मगरु
॥ कुमीहाथपूजा॥ र्वेसमृग कापडावगय धमकुनजापयाय॥ ४॥ पुताक
पुसाटक महाकाटगाडहंरु द्वाहाः॥ पुतिक्क धिदाव सवूठतयीयकः
वडाय॥ ४॥ कनक सरुतनया॥ वरुक्कय॥ यवीयहावपूजा हागाहन॥

दाक मृगव वलिनेवय वेल्लायवावयजा हागाहन॥ द्वाव रुपापतलि
व श्रुतिरावना॥ तन॥ ४॥ मृ द्वादि भित नीव पीतानल स्यामोलावृष्ट
मृगम जिननिवसन निरुमल हंरुक्क द्वाहाय ववदाक कुल्लीकनम
वक्रसुं उविठममृवधेन कसुनक्क॥ सूर्यासन मृपुर् सदातापठामोयि
रावयगा॥ श्राक र्वेस॥ दी॥ ४॥ गापठम अयखादा॥ पशुपहावपूजा दव
गादति॥ ४॥ दकुलाय॥ ४॥ ऊडमानस श्रुतिवक श्रुतिवद स्यादति वि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

गन्धयम्भर आदिन च्छय र्वादिनयक सिन्धुनतविष्णुवज्रयायना सुनातला
 हाग्निरक्षागयथावदावयुजा ॥ ॥ धनमृत्तिलवनागयप्रसूयदिविय
 मातृलवलिङ्गवगुगुञ्जयाधो क्रीडादलुकल्लिकाष्टमिसत्त्वान्गदकावुक
 अमृताग्निविष्णुवयनगा मृक्काकाष्ठादिविषिद्दयाग ॥ ॥ मन्त्राडंमृ
 मृगाग्निथिस्त्राहा ॥ ॥ नमविमार्गे वरगनमात्रा यथेष्टमालागडं वज्र
 गजजालगर्भगर्भाडं वज्रवक्रदं ॥ मन्त्र ॥ अथमो धिदात्र तायमरु

नलमधेनयः॥ स्नानगानपूज्याय आशिर्वाद्य विहाङ्गन॥ ॥ धर्म
समाया लाकनसतयमनु॥ ॐ नमः॥ समनुवृद्धानां ॐ पुण्यानि शरीषत
कुवलि सवेयकमलुं वंध ॐ नु युवनं वंध वेददवी मदा वंध क्षत्रय ॐ
दवासिनयिनकन विरुयादिकं ॐ न्दर ॐ न्दर विविर गिविर मिविर
हं हं हं ट स्वाहा ॥ ॐ ॥ ततः कुलक भ्राधायसीमनु॥ ॥ नमो नलपुया
नमः॥ सर्ववृद्धवा विसर्ज्या ॥ नमो मदायुर्जोयनमः॥ सकत्या ॥ संम्यकीवृद्ध

[illegible]

[illegible]

ॐ लङ्किं वडकायागुमगुगु कुरुकल मदायकालया जठविद्वं
रुद्ररुद्रादाम ॐ ॥ ॐ यजुगुलीयवनी ॥ थीसिमाद्ययसगयसकुशः
प्रा ॥ ॐ ॥ ॐ मदासमराय पवडाकालयागवान् कायवाकविकुवः
ऊ सर्वविनय्या यागिनीरुवकांलि रात्रिध्य कर्त्तृकासूर्येणयलि गालु
वकु मदाकात्र रुक्मिण्यदलि गालु ४ ददकं वं सफ गिरुजा ॐ सफाद
ॐ गिवावन मदा रुगायव ॐ ॐ मदायगलुसल ॐ मलुमालि

मोकां छेव कयुनोयु ला नवयु सर्वशोखा समा युक्तं मा रु सिद्धि
 अथदिमं सर्वं हृत्तनमदीह उगदधय मा दकं विनोमूनिवकुन
 छीमदासचल नभा मुन याक विध्यमहा हर्त सर्वोमूनिमदा सिनव
 याकाध मदाकदमदा सचन नमा मि॥ ॥ धूप ककुन कयुन न
 कीन यदु स्यानयकवर्क सकिरसि तादकोया धकिइ वा॥
 ६० नमः श्रीवक्त्र सत्याय ॥ गुरुस्य गुरुमलुल ॥ दगुनिकलेन नाभा कुरु

नाम शिष्यलसाखंडकाय ॥ स्वस्तिकसमान गुरुमलुल वलिदीप्य कलगा
 कुरु विठ्ठल ॥ शिष्यदाधायय कृत्याव ॥ अथयम ॥ ताधि वज्रस
 वृक्षानो यथादक्षामदा मद् समाधिगतेनोथय स्ववजा ॥ द्युददादिमं
 शिष्यलावना ॥ नरुमासित्ति ताद्य दनक मयात्रे ननु सूर्येडयविष्णुनि
 यवजध वनूपविशया ॥ आकर्षेन वजाक ॥ दिना केन लादाग्नि
 नरा ॥ यथगुरुवियम कथा वादिकन वमुक्ताय ॥ रावना ॥ गदनस्यह

द्वीजमयस्वेतानिनादिबुद्धिनरुथागतानिद्यादविश्वस्यैवकीर्तिना
नामासिद्धकोथं वृद्धानामसिद्धकस्तु उगहनोयवकीर्तिना गुणकथा
यथादले तथादयसमादिभक्तिकारुण्यकृतविचरिगना रावनाभवे
तथागगंयुक्तसमायनेऽमेदागगनद्विचयवैराग्येनकाप्रनाक
तिष्ठ वृद्धमात्रेननिवृत्त्यतद्वैद्यवीयसमेसूत्रनपुत्रातिगंतिष्ठ
मटिगिष्ठानानकं हं वृद्धजातस्यसुःशोभःशोभार्थीसमेवसु

शोभंस्वनसमाशिनंभूरिसिद्धयुतःशुद्धमूलाशुजादिमकिःयमा
विष्टत्यगगलमाययैस्तिनेनालावनादिसहिनेयुगधउपटाकादिव
मुन्नादिगं गीतनृत्तपुष्पककुमादिबुद्धिरिष्टयवाक्षिसनयावर्जित
वायिविक्तकयुक्तकलमीःकंतिष्ठयमाक्षिहितमसिद्धि
मानंयीगीतीगीतीयमानमकुलगीतशायय॥कलकवद्वेनहायथा
गमथा॥यसकुलसकलसत्तुद्विहितस्यसुकीलकस्यववम

कृत्वाधियस्या॥ नि (अ) ससत्त्वजनकस्यमदासुखस्यतत्सदिलरुचकुतप्रसादि
 धेका॥ ॥ पाठदूतकवाचकी॥ ॥ ॐ मदासुखवज्रसत्त्वादिधेकनत्तामः
 रिषिधेकमि, सर्वतथागताधियर्लनदृष्टावत्संनयनद्वयगुणस्य॥
 अलिधेकमदावज्र, ॐ धातुकनमस्तु॥ ॥ ददामि सर्ववद्वानां शिषुः कलय
 संनय॥ मा उवाच॥ ॐ वज्रा दकारिषिधेकमिदं सत्तमस्तमदं मदासुख
 मसायनौरव॥ ॐ निधुदकारिधेक॥ ॐ ॥ अथ वत्ता॥ वाधिद्वजम

त्यादि॥ श्रवना॥ शिष्याः का नमस्तु सत्त्ववृषं हानसत्त्वे कीदृशं नरुचैत
 धागनधविदिः कृष्णरिषिधेकमानं वृषवजादिदिः वृषनियमानं मदः
 लगीनरावयगु॥ ॐ सत्त्ववत्सदृष्टं ॥ अलिधेकमदावज्र, ॐ धातुकनमस्तु
 नं युष्माकं पूजनाथाय सकृदप्येकं वारुर्वी॥ ॐ वज्र धातुवरीश्वरिः
 विद्वद् ॥ ॐ वज्रवज्री नीलरिषिधेकः ॥ ॐ वज्रवज्री नीलरिषिधेकः ॥ ॐ
 वज्रवज्री नीलरिषिधेकः ॥ ॐ वज्रवज्री नीलरिषिधेकः ॥ ॐ वज्रवज्री नीलरिषिधेकः ॥ ॐ